दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

हिंदी विभाग

बी. ए. प्रथम वर्ष

सत्र : प्रथम (GE)

पेपर का नाम : ." हिन्दी भाषा और प्रतियोगी परीक्षाएं भाग 1" HHINGE-1101

डॉ. मीना घुमे

Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded

Faculty of Humanities in Hindi *(Generic/open Elective)*

Semester - I

Paper Code : HHINGE1101, Title हिंदी भाषा और प्रतियोगी परीक्षाएँ - भाग - 1

Curriculum Details: (for 2 Credits)

Module No.	Unit No.	Name of Topic	Hrs. Required to cover the contents 1 Hrs.=60 M.
1.0		**विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में हिंदी का महत्व और उपयोगिता**	
	1.1	संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)/महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग (MPSC) की परीक्षाएँ और हिंदी भाषा	08
	1.2	कर्मचारी चयन मंडल आयोग (Staff Selection Board Commission) की परीक्षाएँ और हिंदी भाषा	
	1.3	रेल / डाक / बीमा / बैंक तथा अन्य परीक्षाएँ और हिंदी भाषा	
2.0		**हिंदी भाषा का विकास क्रम और प्रतियोगी परीक्षाएँ**	
	2.1	प्रारंभिक हिंदी का विकास	08
	2.2	मध्यकालीन हिंदी का विकास	
	2.3	खडीबोली और नागरी लिपि का विकास	
3.0		**भाषा कौशल और प्रतियोगी परीक्षाएँ**	
	3.1	लेखन कौशल - स्वरूप, प्रकार और उद्देश्य	08
	3.2	संवाद कौशल - स्वरूप और विशेषताएँ	
	3.3	साक्षात्कार कौशल	
4.0		**हिंदी के प्रायोगिक रूप और प्रतियोगी परीक्षाएँ**	
	4.1	ई कॉमर्स और हिंदी : स्वरूप और महत्व	06
	4.2	तकनीकी हिंदी भाषा की उपयोगिता	
	4.3	अनुवाद : अर्थ ,स्वरुप और परिभाषाएँ	
		Total	**30**

35

Faculty of Humanities, S.R.T.M. University, Nanded.

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. धीरेंद्र वर्मा-हिंदी भाषा और लिपि,हिंदुस्तानी एकेडेमी,इलाहाबाद
2. गोपाल राय-हिंदी भाषा का विकास,राजकमल प्रकाशन, 1-B, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली - 110002
3. प्रो.राजमणि शर्मा- हिंदी भाषा विकास के विविध आयाम,हरियाणा ग्रंथ अकादमी,पंचकूला
4. उदयनारायण तिवारी-हिंदी भाषा का उदगम और विकास,लोकभारती प्रकाशन,प्रयाग
5 प्रो.एच.पद्मनाभन हिंदी भाषा और लिपि, वाणी प्रकाशन-21 ,4695 ,ए ,दरियागंज ,नयी दिल्ली110002
6. संपा.अमर बहादुर सिंह-बैंकिग-हिंदी पाठ्यक्रम,केंद्रिय हिंदी संस्थान,आगरा
7. हिंदी भाषा-प्रतियोगिता दर्पण - परीक्षापयोगी सीरीज-ई बुक
8. कृष्णकुमार गोस्वामी-अनुप्रयोग हिंदी,वाणी प्रकाशन-21 ,4695 ,ए ,दरियागंज ,नयी दिल्ली
9. जी.गोपीनाथन-अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग,लोकभारती प्रकाशन,प्रयाग
10.बालेंदु शर्मा दाधीच-तकनीक तेरे कितने आयाम,प्रभात प्रकाशन प्रा.लि.4-19 आसफ अली रोड ,नई दिल्ली-110002
11.डॉ. हिंदी भाषा : लेखन कौशल (इग्नू), ऑनलाईन अध्ययन सामग्री (सॉफ्ट कॉपी/ पीडीएफ) **https://www-ignouassignmentguru-com.translate.goog/bhdla-136-study-material-download/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc**
12. वेब साईड-केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान-**https://chti.rajbhasha.gov.in/?9640?21**

Edit with WPS Office

1.0 विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी का महत्व और उपयोगिता

संग लोक सेवा आयोग यूपीएससी (UPSC) की परीक्षाएं और हिंदी भाषा :

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की सिविल सेवा परीक्षा (CSE) सहित अन्य भर्ती परीक्षाओं में हिंदी भाषा की भूमिका संवैधानिक, प्रशासनिक और परीक्षा प्रणाली के स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण है। UPSC अभ्यर्थियों को पूरी चयन प्रक्रिया में हिंदी को माध्यम और वैकल्पिक विषय के रूप में चुनने की पूरी स्वतंत्रता देता है।

1. परीक्षा के विभिन्न चरणों में हिंदी की स्थिति

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims)

द्विभाषी प्रश्नपत्र: सामान्य अध्ययन (GS Paper-1) और CSAT (Paper-2) दोनों के प्रश्नपत्र हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मुद्रित होते हैं।

अनुवाद का मुद्दा: आयोग द्वारा अंग्रेजी मूल प्रश्नों का हिंदी में तकनीकी/मशीनी अनुवाद किए जाने पर अक्सर विवाद होता रहा है। इसलिए हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों को संशय की स्थिति में अंग्रेजी प्रश्न को भी देखने की सलाह दी जाती है, क्योंकि नियम पुस्तिका के अनुसार विवाद की स्थिति में अंग्रेजी संस्करण को ही अंतिम माना जाता है।

मुख्य परीक्षा (Mains)

उत्तर लेखन का माध्यम: अभ्यर्थी निबंध (Essay) और चारों सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्रों (GS 1 to 4) के उत्तर हिंदी माध्यम में लिख सकते हैं।

अनिवार्य भारतीय भाषा प्रश्नपत्र (Qualifying Indian Language Paper):

संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल भाषाओं में अभ्यर्थी हिंदी का चयन कर सकते हैं।

यह 300 अंकों का क्वालीफाइंग पेपर होता है, जिसमें न्यूनतम 25% (75 अंक) प्राप्त करना अनिवार्य है। इसमें गद्यांश, संक्षेपण (Précis), निबंध, अनुवाद और बुनियादी व्याकरण शामिल होता है।

माध्यम का लचीलापन: यदि कोई अभ्यर्थी अपने सामान्य अध्ययन के पेपर अंग्रेजी में लिखता है, तब भी वह अपने वैकल्पिक विषय (Optional Subject) के रूप में हिंदी साहित्य का चयन कर सकता है।

साक्षात्कार / व्यक्तित्व परीक्षण (Interview)

मुख्य परीक्षा पास करने के बाद विस्तृत आवेदन पत्र (DAF) भरते समय अभ्यर्थी साक्षात्कार के लिए हिंदी भाषा का विकल्प चुन सकते हैं।

यदि बोर्ड के सदस्य मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषी हों, तो आयोग द्वारा अभ्यर्थी की सुविधा के लिए एक आधिकारिक दुभाषिया (Interpreter) उपलब्ध कराया जाता है, ताकि संवाद में कोई बाधा न आए।

2. वैकल्पिक विषय के रूप में 'हिंदी साहित्य' (Hindi Literature)

हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम—दोनों ही पृष्ठभूमि के अभ्यर्थियों के बीच हिंदी साहित्य सबसे लोकप्रिय और सुरक्षित माने जाने वाले वैकल्पिक विषयों में से एक है।

पाठ्यक्रम की संरचना:


Edit with WPS Office

पेपर-1: हिंदी भाषा का इतिहास (अपभ्रंश, अवधी, ब्रज, खड़ी बोली और देवनागरी लिपि का मानकीकरण) एवं हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल)।

पेपर-2: गद्य और पद्य की मूल रचनाओं का पाठ व आलोचना (जैसे कबीर, सूरदास, तुलसीदास, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद का 'गोदान', भारतेन्दु हरिश्चंद्र का 'भारत दुर्दशा' आदि)।

सफलता दर व लाभ: इसका पाठ्यक्रम पूरी तरह से स्थिर (Static) है, इसमें समसामयिकी (Current Affairs) का दबाव नहीं होता और अध्ययन सामग्री व गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन आसानी से उपलब्ध है। कई टॉपर्स (जैसे निशांत जैन, सुनील धनवंता आदि) ने इस विषय के साथ शीर्ष रैंक हासिल की है।

3. हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

अनुवाद की जटिलता: प्रारंभिक परीक्षा में अंग्रेजी से हिंदी में किए गए जटिल और कृत्रिम मशीनी अनुवाद से कई बार प्रश्नों का अर्थ बदल जाता है, जिससे प्रश्नों को समझने में अतिरिक्त समय लगता है।

मानक अध्ययन सामग्री का अभाव: मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन (विशेषकर GS-3: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, आंतरिक सुरक्षा) के लिए मानक संदर्भ पुस्तकें और सरकारी रिपोर्टें मूल रूप से अंग्रेजी में प्रकाशित होती हैं।

CSAT की बाधा: CSAT पेपर में रीजनिंग और कॉम्प्रिहेंशन के हिंदी अनुवाद कई बार अस्पष्ट होने से हिंदी माध्यम के ग्रामीण पृष्ठभूमि के अभ्यर्थियों के लिए कट-ऑफ निकालना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

4. राजभाषा के रूप में UPSC में हिंदी का प्रयोग

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 और राजभाषा अधिनियम, 1963 के अंतर्गत UPSC अपनी आंतरिक प्रशासनिक कार्यप्रणाली में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है:

राजभाषा अनुभाग: UPSC में एक समर्पित राजभाषा शाखा है जो आयोग के वार्षिक प्रतिवेदनों, विज्ञापनों, अधिसूचनाओं और आधिकारिक पत्राचार का द्विभाषी प्रकाशन सुनिश्चित करती है।

हिंदी पखवाड़ा/पुरस्कार: आयोग के कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नियमित रूप से कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं।

तैयारी के लिए प्रमुख सुझाव

शब्दावली पर पकड़: वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग (CSTT) द्वारा निर्धारित पारिभाषिक शब्दों का नियमित अभ्यास करें।

समाचार पत्र चयन: 'दैनिक जागरण' (राष्ट्रीय संस्करण) या 'जनसत्ता' के साथ-साथ किसी मानक अंग्रेजी अखबार (The Hindu / Indian Express) के महत्वपूर्ण मुद्दों को समझकर अपने नोट्स हिंदी में तैयार करें।

उत्तर लेखन की गति व शुद्धता: देवनागरी लिपि में लिखते समय गति, वर्तनी की शुद्धता और स्पष्ट हस्तलेखन पर विशेष ध्यान दें।

सिविल सेवा परीक्षा में हिंदी साहित्य वैकल्पिक विषय के पाठ्यक्रम और पुस्तकों की सूची :

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की मुख्य परीक्षा में हिंदी साहित्य वैकल्पिक विषय के कुल दो प्रश्नपत्र होते हैं—प्रत्येक 250 अंक का (कुल 500 अंक)।


Edit with WPS Office

प्रश्नपत्र - 1: भाषा एवं साहित्य का इतिहास

यह पेपर पूरी तरह से सैद्धांतिक और तथ्यात्मक है। इसमें दो खंड होते हैं:

खंड 'क': हिंदी भाषा और नागरी लिपि का इतिहास

मुख्य विषय:

अपभ्रंश, अवहट्ठ और पुरानी हिंदी का व्याकरणिक तथा अनुप्रयुक्त स्वरूप।

मध्यकाल में ब्रज और अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास।

19वीं सदी में खड़ी बोली का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास।

हिंदी भाषा और नागरी लिपि का मानकीकरण।

स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विकास; संघ की राजभाषा के रूप में संवैधानिक स्थिति।

हिंदी की बोलियाँ और मानक हिंदी की व्याकरणिक संरचना।

संदर्भ पुस्तकें:

'हिंदी भाषा का इतिहास' — डॉ. भोलानाथ तिवारी

'हिंदी भाषा' — डॉ. हरदेव बाहरी

खंड 'ख': हिंदी साहित्य का इतिहास

मुख्य विषय:

आदिकाल: सिद्ध-नाथ साहित्य, रासो काव्य परंपरा (चंदबरदाई)।

भक्तिकाल: संत काव्यधारा (कबीर), सूफी प्रेमाख्यानक (जायसी), कृष्ण भक्ति (सूरदास), राम भक्ति (तुलसीदास)।

रीतिकाल: रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्य (बिहारी, घनानंद)।

आधुनिक काल: भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग (मैथिलीशरण गुप्त), छायावाद (प्रसाद, निराला, महादेवी, पंत), प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता (अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन)।

कथा साहित्य व अन्य विधाएँ: उपन्यास एवं कहानी का विकास (प्रेमचंद से समकालीन दौर), नाटक (भारतेन्दु, प्रसाद, मोहन राकेश), निबंध और आलोचना।

संदर्भ पुस्तकें:

'हिंदी साहित्य का इतिहास' — आचार्य रामचंद्र शुक्ल (आधार ग्रंथ)

'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' — डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

'हिंदी साहित्य का सरल इतिहास' — डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी (शुरुआत के लिए उत्तम)


Edit with WPS Office

प्रश्नपत्र - 2: मूल पाठ एवं रचनाओं की व्याख्या

इस पेपर में निर्धारित मूल पाठ (Texts) से व्याख्या और आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।

खंड 'क': पद्य साहित्य (Poetry)

कबीर: कबीर ग्रंथावली (संपादक: श्यामसुंदर दास) — आरंभिक 100 पद।

सूरदास: भ्रमरगीत सार (संपादक: रामचंद्र शुक्ल) — आरंभिक 100 पद।

तुलसीदास: रामचरितमानस (अयोध्याकांड) और कवितावली (उत्तरकांड)।

जायसी: पद्मावत (संपादक: रामचंद्र शुक्ल) — सिंहलद्वीप खंड और नागमती वियोग खंड।

बिहारी: बिहारी रत्नाकर (संपादक: जगन्नाथदास रत्नाकर) — आरंभिक 100 दोहे।

मैथिलीशरण गुप्त: भारत-भारती।

जयशंकर प्रसाद: कामायनी (चिंता और श्रद्धा सर्ग)।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': राम की शक्तिपूजा और सरोज स्मृति।

रामधारी सिंह 'दिनकर': कुरुक्षेत्र।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय': असाध्य वीणा (आंगन के पार द्वार से)।

मुक्तिबोध: ब्रह्मराक्षस।

नागार्जुन: बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, हरिजन गाथा।

खंड 'ख': गद्य साहित्य (Prose)

नाटक एवं एकांकी:

भारत दुर्दशा — भारतेन्दु हरिश्चंद्र

स्कंदगुप्त — जयशंकर प्रसाद

आषाढ़ का एक दिन — मोहन राकेश

उपन्यास:

गोदान — मुंशी प्रेमचंद

बाणभट्ट की आत्मकथा — आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

मैला आँचल — फणीश्वरनाथ 'रेणु'

दिव्या — यशपाल

Edit with WPS Office

कहानी संग्रह:

एक दुनिया समानांतर (संपादक: राजेंद्र यादव) — चुनिंदा 15 कहानियाँ

निबंध एवं आलोचना:

चिंतामणि भाग-1 — आचार्य रामचंद्र शुक्ल (उत्साह, श्रद्धा-भक्ति, लोभ और प्रीति, कविता क्या है)

निबंध नीलय (संपादक: डॉ. सत्येंद्र)

उत्तर लेखन व तैयारी की रणनीति

मूल पाठ का अध्ययन: व्याख्या खंड (Paper-2) में पूरे अंक पाने के लिए गाइड बुक्स के बजाय निर्धारित मूल कृतियों (जैसे गोदान, कामायनी, आषाढ़ का एक दिन) को स्वयं पढ़ना आवश्यक है।

तुलनात्मक दृष्टिकोण: उत्तर लिखते समय प्रवृत्तियों की तुलना करें (जैसे कबीर और तुलसी की समाज-दृष्टि, या 'दिव्या' और 'गोदान' में नारी चेतना)।

आलोचकों के उद्धरण: आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नामवर सिंह और डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के प्रामाणिक कथनों को उत्तर में रेखांकित करके शामिल करने से अंक बढ़ते हैं।

भाषा खंड (Paper-1, Section A): यह खंड गणित की तरह अंकदायी होता है। इसमें व्याकरणिक नियमों, उदाहरणों और मानकीकरण के तथ्यों को बुलेट पॉइंट्स व आरेखों (Diagrams) के साथ प्रस्तुत करें।

पाठ्यक्रम के किसी विशिष्ट भाग—जैसे व्याख्या लिखने की तकनीक या पेपर-1 के भाषा खंड की तैयारी—पर अधिक केंद्रित

हिंदी साहित्य वैकल्पिक विषय में अधिकतम अंक (300+) प्राप्त करने के लिए दो क्षेत्र सबसे निर्णायक होते हैं: पेपर-1 का भाषा खंड (जो गणित की तरह सटीक अंक देता है) और पेपर-2 का व्याख्या खंड (जहाँ परीक्षक की पहली नज़र आपकी साहित्यिक समझ पर पड़ती है)।

1. पेपर-1: भाषा खंड (Section A) की सटीक रणनीति

इस खंड की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूरी तरह वस्तुनिष्ठ (Objective) प्रकृति का है। यहाँ विश्लेषणात्मक निबंध लिखने के बजाय तथ्यों, नियमों और उदाहरणों की स्पष्टता पर अंक मिलते हैं।

उत्तर संरचना का प्रारूप

भूमिका से बचें: सीधे बिंदु पर आएँ। यदि पूछा जाए "अपभ्रंश की व्याकरणीय विशेषताएँ", तो पृष्ठभूमि लिखने में समय नष्ट न करें।

वर्गीकरण (Categorization): उत्तर को हमेशा तीन स्पष्ट उप-शीर्षकों में बाँटें:

ध्वन्यात्मक विशेषताएँ (Phonological features): स्वरों और व्यंजनों में क्या परिवर्तन हुए (जैसे: ऋ का लोप, श/ष का 'स' में परिवर्तन, द्वित्व व्यंजनों का प्रयोग)।

रूपात्मक/व्याकरणिक विशेषताएँ (Morphological features): संज्ञा, सर्वनाम, कारक, लिंग, वचन और क्रिया रूपों में आए बदलाव।

Edit with WPS Office

शब्दावली (Lexical features): तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों का अनुपात।

प्रामाणिक उदाहरण अनिवार्य हैं: हर नियम के साथ एक मूल उदाहरण जरूर दें।

नियम: अपभ्रंश में नपुंसकलिंग प्रायः समाप्त होकर पुल्लिंग या स्त्रीलिंग में समाहित हो गया।

उदाहरण: संस्कृत 'अक्षि' (नपुं.) \rightarrow अपभ्रंश 'अक्खि' (स्त्री./पुं.)।

मानचित्र व प्रवाह आरेख (Flowcharts):

शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी आदि अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं के उद्भव को एक वृक्ष आरेख (Tree diagram) के माध्यम से दिखाएँ।

देवनागरी लिपि के विकास को ब्राह्मी \rightarrow गुप्त \rightarrow कुटिल \rightarrow नागरी के फ्लोचार्ट से प्रस्तुत करें।

2. पेपर-2: व्याख्या (व्याख्या खंड) लिखने का मानक ढाँचा

व्याख्या खंड में परीक्षार्थी प्रायः केवल भावार्थ लिखकर आ जाते हैं, जिससे औसत अंक मिलते हैं। एक उत्कृष्ट व्याख्या को निम्नलिखित चार चरणों में संरचित किया जाना चाहिए:

क. संदर्भ (Context)

केवल रचना और रचनाकार का नाम न लिखें, बल्कि उस समय की पृष्ठभूमि रेखांकित करें।

प्रारूप: प्रस्तुत पद्यांश/गद्यांश भक्तिकाल की प्रेमाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित महाकाव्य 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' से उद्धृत है। इसमें कवि ने विरहावस्था की लौकिक पीड़ा को पारलौकिक विरह के प्रतीकात्मक स्तर पर उभारा है।

ख. प्रसंग (Occasion)

ठीक उस क्षण की परिस्थिति को 2-3 पंक्तियों में स्पष्ट करें कि यह बात कब, किसने, किससे और किस मनोदशा में कही।

ग. व्याख्या (Interpretation / Core Meaning)

यह केवल 'सरल शब्दों में अनुवाद' नहीं है।

द्वि-स्तरीय अर्थ: भक्ति और छायावादी काव्यों में पंक्तियों के दो अर्थ होते हैं—एक बाह्य (लौकिक) और दूसरा अंतर्निहित (दार्शनिक या रूपकात्मक)। दोनों को स्पष्ट करें।

रचनाकार के अंतर्द्वंद्व और पात्र के मनोविज्ञान का विश्लेषण करें।

घ. विशेष (Critical Appreciation) — सबसे महत्वपूर्ण भाग

इस भाग को अनिवार्यतः बुलेट पॉइंट्स में लिखें:

भाव पक्ष: रचनाकार की विचार-दृष्टि, समाज-बोध या समकालीन प्रासंगिकता। (जैसे: कबीर की पंक्तियों में उलटबाँसी और सामाजिक पाखंड पर प्रहार)।

Edit with WPS Office

कला पक्ष:

भाषा: अवधी, ब्रज, तत्समप्रधान खड़ी बोली आदि।

रस एवं अलंकार: कौन सा रस प्रधान है और किस विशिष्ट अलंकार से अर्थ में चमत्कार आया है (केवल नाम न गिनाएँ, बल्कि बताएँ कि वह अलंकार कैसे भाव को गहरा कर रहा है)।

छंद व लय: दोहा-चौपाई, कवित्त, सवैया, मुक्त छंद।

तुलनात्मक टिप्पणी (Cross-Reference): समान भाव की किसी अन्य कवि की पंक्ति उद्धृत करें।

उदाहरण: यदि सूरदास के विरह का प्रसंग है, तो घनानंद या जायसी की विरह-वेदना से तुलना करें।

आलोचक का मत: आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. रामविलास शर्मा या हजारीप्रसाद द्विवेदी की किसी संक्षिप्त टिप्पणी को उद्धृत करें।

3. समय प्रबंधन और दैनिक अभ्यास

दैनिक 1 उत्तर लेखन: प्रारंभिक चरण में पूरा पेपर लिखने के बजाय प्रतिदिन 15 से 20 मिनट में एक व्याख्या या भाषा खंड का एक 10-अंक वाला प्रश्न लिखने का अभ्यास करें।

उद्धरणों की डायरी (Quote Bank): प्रत्येक प्रमुख कवि/लेखक (तुलसी, कबीर, प्रसाद, मुक्तिबोध, प्रेमचंद) के कम से कम 8 -10 प्रामाणिक पद/संवाद और 3-4 आलोचकों की टिप्पणियों की एक अलग पॉकेट डायरी तैयार करें और उन्हें बार-बार दोहराएँ।

विशिष्ट रचना ('राम की शक्तिपूजा') की व्याख्या का एक वास्तविक नमूना :

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कालजयी कविता 'राम की शक्तिपूजा' की एक महत्वपूर्ण पंक्ति के माध्यम से व्याख्या का मानक परीक्षा-उपयोगी प्रारूप:

मूल पद्यांश

"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।"

कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

1. संदर्भ

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक काल के छायावादी युग के ओज व विद्रोह के प्रतिनिधि कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित अप्रतिम प्रबंधात्मक लंबी कविता 'राम की शक्तिपूजा' से उद्धृत हैं। यह कविता मूलतः अनामिका (1938) में संकलित है।

2. प्रसंग

लंका समर के दौरान जब रावण को महाशक्ति (दुर्गा) का संबल प्राप्त देख श्रीराम संशय और निराशा के गहन भंवर में घिर जाते हैं, तब जाम्बवान के परामर्श पर वे शक्ति की मौलिक कल्पना कर आराधना में लीन होते हैं। आराधना के अंतिम चरण में जब देवी द्वारा परीक्षा स्वरूप अंतिम नीलकमल उठा लेने पर राम अपना 'राजीव-नयन' अर्पित करने को उद्यत होते हैं, तब पराशक्ति उनकी इस अनन्य निष्ठा से संतुष्ट होकर साक्षात प्रकट होती हैं।

Edit with WPS Office

3. व्याख्या

अभयदान और विजय का उद्घोष: महाशक्ति राम की अनन्य साधना और आत्म-समर्पण की पराकाष्ठा से प्रसन्न होकर उन्हें 'होगी जय, होगी जय' का द्विगुणित आशीर्वाद देती हैं। यह केवल एक भावी घटना का संकेत नहीं, बल्कि धर्म और सत्य की अधर्म पर अवश्यंभावी विजय का अमोघ आश्वासन है।

'पुरुषोत्तम नवीन' का मर्म: देवी राम को केवल परंपरागत मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में नहीं, बल्कि 'नवीन पुरुषोत्तम' के रूप में संबोधित करती हैं। यह नवीनता इस बात में है कि यह राम देवत्व के कवच से सुरक्षित नहीं हैं, बल्कि एक सामान्य मानव की तरह संशय, पीड़ा, वेदना और संघर्ष झेलते हुए अपनी आंतरिक शक्ति (साधना) के बल पर अलौकिक सत्ता को जीतते हैं।

अद्वैत का साक्षात्कार: 'वदन में हुई लीन' के माध्यम से निराला यह दर्शाते हैं कि पराशक्ति और राम (आराधक और आराध्य) दो पृथक सत्ताएं नहीं रहीं। बाह्य शक्ति का राम के मुख (व्यक्तित्व) में समाहित हो जाना वस्तुतः मनुष्य की आत्म-चेतना के भीतर ही ईश्वरीय शक्ति के जागरण का प्रतीक है।

4. विशेष (आलोचनात्मक मूल्यांकन)

भाव पक्ष:

राष्ट्रीय मुक्ति चेतना: स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में यह प्रसंग तत्कालीन भारतीय समाज को संदेश देता है कि शक्ति के बाह्य साधनों (ब्रिटिश साम्राज्य) से संपन्न अधर्म को केवल परंपरा के सहारे नहीं, बल्कि नवीन शक्ति-अर्जन और मौलिक संकल्प से ही पराजित किया जा सकता है।

अद्वैत वेदांत का प्रभाव: शक्ति का आराधक के भीतर लीन होना शाक्त दर्शन और अद्वैत दर्शन का अद्भुत समन्वय है, जहाँ साधक स्वयं ब्रह्म/शक्ति स्वरूप हो जाता है।

कला पक्ष:

भाषा: संस्कृतनिष्ठ, तत्समप्रधान, ओजस्वी खड़ी बोली।

रस एवं गुण: शांत रस और वीर रस का समन्वय, जहाँ गौड़ी रीति और 'ओज' गुण की प्रधानता है।

ध्वनि-प्रभाव: 'होगी जय, होगी जय' का द्वित्व प्रयोग मंत्रवत प्रभाव उत्पन्न करता है, जिससे काव्य में नाद-सौंदर्य की सृष्टि होती है।

तुलनात्मक टिप्पणी:

रामकथा की इस शक्ति-कल्पना का बीज कृत्तिवास रामायण से लिया गया है, किंतु निराला ने इसे आधुनिक युग की संशयग्रस्त मानव-मनोभूमि से जोड़कर युगीन यथार्थ का महाकाव्य बना दिया है।

आलोचक दृष्टि:

डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में: "राम की शक्तिपूजा में निराला का अपना जीवन-संघर्ष और तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना दोनों एकाकार होकर अभिव्यक्त हुए हैं; यह पराजय के बीच से विजय के पथ का संधान है।"

महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग (MPSC) की परीक्षाओं में हिंदी भाषा :

Edit with WPS Office

महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग (MPSC) की परीक्षाओं में हिंदी भाषा की भूमिका, संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की तुलना में काफी भिन्न और सीमित है। जहाँ UPSC में हिंदी को मुख्य परीक्षा के माध्यम, अनिवार्य भाषा प्रश्नपत्र और वैकल्पिक विषय तीनों रूपों में व्यापक स्थान प्राप्त है, वहीं MPSC राज्य-स्तरीय आयोग होने के कारण मराठी और अंग्रेजी को प्राथमिकता देता है।

1. राज्य सेवा परीक्षा (Rajyaseva / Civil Services) में हिंदी की स्थिति

MPSC द्वारा UPSC की तर्ज पर वर्णनात्मक (Descriptive) परीक्षा प्रणाली लागू किए जाने के बाद परीक्षा संरचना निम्नलिखित है:

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims)

प्रश्नपत्र की भाषा: सामान्य अध्ययन (GS) और CSAT के प्रश्न केवल मराठी और अंग्रेजी द्विभाषी प्रारूप में ही मुद्रित होते हैं। यहाँ प्रश्नों का हिंदी अनुवाद उपलब्ध नहीं होता।

मुख्य परीक्षा (Mains)

उत्तर लेखन का माध्यम:

सामान्य अध्ययन (GS Paper 1 से 4) और निबंध का उत्तर केवल मराठी या अंग्रेजी में ही लिखा जा सकता है। इसमें उत्तर लेखन के लिए हिंदी माध्यम चुनने की अनुमति नहीं है।

अनिवार्य भाषा प्रश्नपत्र (Qualifying Language Papers):

मुख्य परीक्षा में दो भाषा प्रश्नपत्र अनिवार्य होते हैं:

मराठी (अर्हताकारी/क्वालीफाइंग)

अंग्रेजी (अर्हताकारी/क्वालीफाइंग)

UPSC की तरह यहाँ संविधान की 8वीं अनुसूची की अन्य भाषाओं (जैसे हिंदी) को अनिवार्य भाषा के रूप में चुनने की छूट नहीं होती; मराठी अनिवार्य है।

वैकल्पिक विषय (Optional Subject):

मुख्य परीक्षा में शामिल वैकल्पिक विषयों की सूची में UPSC की तरह 'हिंदी साहित्य' (Hindi Literature) का विकल्प उपलब्ध नहीं है।

यहाँ साहित्य के विषयों में केवल मराठी साहित्य (Marathi Literature) और अंग्रेजी साहित्य (English Literature) ही उपलब्ध हैं।

साक्षात्कार (Interview)

साक्षात्कार का प्राथमिक माध्यम मराठी और अंग्रेजी ही रहता है।

यद्यपि बोर्ड के समक्ष संवाद के दौरान यदि किसी बिंदु पर अभ्यर्थी अपनी बात रखने के लिए हिंदी का सहज प्रयोग करता है, तो अनौपचारिक रूप से बोर्ड समझ सकता है, किंतु औपचारिक साक्षात्कार का माध्यम हिंदी स्वीकृत नहीं होता।

2. गैर-राजपत्रित संयुक्त परीक्षा (Group B & Group C) में हिंदी


Edit with WPS Office

मंत्रालय लिपिक (Clerk-Typist), कर सहायक (Tax Assistant), उप-निरीक्षक (PSI), राज्य कर निरीक्षक (STI) आदि पदों के लिए:

भाषा परीक्षण: मुख्य परीक्षा के पेपर-1 में भाषा खंड के अंतर्गत केवल मराठी व्याकरण और अंग्रेजी व्याकरण से ही प्रश्न पूछे जाते हैं। हिंदी भाषा या व्याकरण का कोई प्रश्नपत्र या अनुभाग इसमें नहीं होता।

टाइपिंग कौशल (Skill Test):

क्लर्क-टाइपिस्ट जैसे पदों के लिए केवल मराठी टाइपिंग (30 शब्द/मिनट) और अंग्रेजी टाइपिंग (40 शब्द/मिनट) की अहर्ता अनिवार्य होती है। हिंदी टाइपिंग मान्य नहीं है।

3. कनिष्ठ महाविद्यालय व डिग्री कॉलेज व्याख्याता (Assistant Professor / Lecturer)

यदि कोई अभ्यर्थी MPSC के माध्यम से शासकीय महाविद्यालयों में अध्यापन सेवा में जाना चाहता है, तो यहाँ हिंदी भाषा की सीधी और महत्वपूर्ण भूमिका होती है:

शासकीय कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय (GES - Group A):

जब उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग द्वारा शासकीय महाविद्यालयों में सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) के पदों का विज्ञापन जारी किया जाता है, तब विषय-विशेष की लिखित परीक्षा/साक्षात्कार सीधे हिंदी साहित्य और भाषा से संबंधित होता है।

पात्रता: इसके लिए UGC नियमों के अनुसार संबंधित विषय (हिंदी) में न्यूनतम 55% अंकों के साथ स्नातकोत्तर (M.A.), NET/SET या Ph.D. अनिवार्य होती है।

4. अन्य तकनीकी एवं विशेष सेवाएँ

विधि एवं न्याय विभाग (राजभाषा शाखा):

कभी-कभी राज्य सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में अनुवादक (Translator) या भाषा अधिकारी (Language Officer) के विशेष पद विज्ञापित होते हैं, जहाँ मराठी-हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी या त्रिभाषी दक्षता की आवश्यकता होती है।

सारांश व अभ्यर्थियों के लिए व्यावहारिक सुझाव

मराठी भाषा पर अनिवार्य पकड़: MPSC की प्रशासनिक सेवाओं (उप-जिलाधिकारी, डीएसपी, तहसीलदार आदि) का लक्ष्य रखने वाले हिंदी पृष्ठभूमि के अभ्यर्थियों के लिए मराठी भाषा का पठन, लेखन और व्याकरणिक ज्ञान अनिवार्य है।

माध्यम का चयन: सामान्य अध्ययन की तैयारी अंग्रेजी या मराठी माध्यम से ही करनी होगी।

UPSC बनाम MPSC: यदि आपकी प्राथमिक ताकत 'हिंदी माध्यम' और 'हिंदी साहित्य वैकल्पिक विषय' है, तो संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) या उत्तर भारतीय राज्य लोक सेवा आयोग (जैसे UPPSC, BPSC, MPPSC) अधिक अनुकूल मंच प्रदान करते हैं; MPSC में प्रशासनिक सेवा हेतु मराठी भाषा में सहज होना प्राथमिक आवश्यकता है।

कर्मचारी चयन आयोग (Staff Selection Commission - SSC) भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों और अधीनस्थ कार्यालयों में ग्रुप 'B' (अराजपत्रित) और ग्रुप 'C' के पदों पर भर्ती के लिए परीक्षाएं आयोजित करता है।

एसएससी की परीक्षाओं में हिंदी भाषा की भूमिका तीन स्तरों पर देखी जाती है:


Edit with WPS Office

परीक्षा के माध्यम के रूप में (Medium of Examination)

एक अनिवार्य/वैकल्पिक विषय के रूप में (Subject/Section)

विशिष्ट पदों के लिए मुख्य अर्हता के रूप में (Specialized Posts)

1. कंप्यूटर आधारित परीक्षाओं (CBE) में माध्यम के रूप में हिंदी

एसएससी की प्रमुख राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं—जैसे CGL (Combined Graduate Level), CHSL (10+2), MTS (Multi-Tasking Staff), GD Constable, और CPO (SI in Delhi Police/CAPFs) में:

द्विभाषी प्रश्नपत्र: 'अंग्रेजी भाषा एवं बोधगम्यता' (English Language & Comprehension) खंड को छोड़कर शेष तीनों खंड—तर्कशक्ति (Reasoning), सामान्य ज्ञान/जागरूकता (General Awareness) और संख्यात्मक अभियोग्यता (Quantitative Aptitude/Maths)—पूरी तरह हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध होते हैं।

भाषा बदलने की सुविधा: कंप्यूटर आधारित परीक्षा (CBT) देते समय अभ्यर्थी स्क्रीन पर प्रत्येक प्रश्न की भाषा अपनी सुविधानुसार हिंदी या अंग्रेजी में बदल (toggle) सकते हैं।

क्षेत्रीय भाषाओं का विस्तार: एमटीएस (MTS) और जीडी कांस्टेबल (GD Constable) जैसी परीक्षाओं में अब हिंदी और अंग्रेजी के अतिरिक्त संविधान की 8वीं अनुसूची की 13 अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी प्रश्नपत्र उपलब्ध कराया जाता है।

2. परीक्षाओं में एक विषय (Subject) के रूप में हिंदी

एसएससी की सामान्य परीक्षाओं (CGL, CHSL, CPO) में अंग्रेजी भाषा का एक अनिवार्य प्रश्नपत्र होता है, लेकिन कुछ विशिष्ट परीक्षाओं में अभ्यर्थियों को अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी चुनने का विकल्प मिलता है:

क. एसएससी जीडी कांस्टेबल (SSC GD Constable)

इसमें कंप्यूटर परीक्षा के चौथे खंड में 'General Hindi' या 'General English' में से किसी एक को चुनने का पूर्ण विकल्प होता है।

हिंदी पाठ्यक्रम: वर्तनी शुद्धि, विलोम शब्द, पर्यायवाची, मुहावरे व लोकोक्तियाँ, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, वाक्य शुद्धि, रिक्त स्थान की पूर्ति और अपठित गद्यांश (Comprehension)।

हिंदी भाषी राज्यों के ग्रामीण और गैर-अंग्रेजी पृष्ठभूमि के अभ्यर्थियों के लिए यह खंड अत्यंत अंकदायी (Scoring) साबित होता है।

ख. टंकण / टाइपिंग टेस्ट (Skill Test)

CHSL, CGL और आशुलिपिक (Stenographer) जैसी परीक्षाओं के टंकण परीक्षण में अभ्यर्थी हिंदी टाइपिंग का विकल्प चुन सकते हैं।

फॉन्ट और लेआउट: हिंदी टाइपिंग के लिए सामान्यतः Mangal Font पर Inscript या Remington (CBI/GAIL) की-बोर्ड लेआउट का विकल्प प्रदान किया जाता है।

गति सीमा: सामान्यतः हिंदी टंकण में 30 शब्द प्रति मिनट (w.p.m.) की गति अपेक्षित होती है (जबकि अंग्रेजी में 35 w.p.m.)।


Edit with WPS Office

3. हिंदी पृष्ठभूमि के लिए समर्पित भर्ती: कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (JHT)

कर्मचारी चयन आयोग आयोग की परीक्षाएं और हिन्दी भाषा :

कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित SSC Junior Hindi Translator (JHT), Junior Translator (JT) और Senior Hindi Translator (SHT) परीक्षा उन अभ्यर्थियों के लिए सबसे प्रतिष्ठित अवसर है जो हिंदी भाषा और साहित्य में स्नातकोत्तर (M.A.) हैं।

पात्रता (Eligibility)

किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातकोत्तर (Master's Degree) और डिग्री स्तर पर अंग्रेजी एक अनिवार्य/ऐच्छिक विषय या परीक्षा के माध्यम के रूप में रही हो (अथवा अंग्रेजी में स्नातकोत्तर और डिग्री स्तर पर हिंदी)।

साथ ही, हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद में मान्यता प्राप्त डिप्लोमा/प्रमाणपत्र, या भारत सरकार/सार्वजनिक उपक्रमों में 2 वर्ष का अनुवाद कार्य का अनुभव।

परीक्षा की संरचना

यह परीक्षा दो चरणों में आयोजित की जाती है:

पेपर-1 (कंप्यूटर आधारित वस्तुनिष्ठ परीक्षा - 200 अंक):

General Hindi (100 प्रश्न - 100 अंक): मानक व्याकरण, संधि, समास, कारक, काल, पर्यायवाची, विलोम, शब्द-युग्म, मुहावरे, वाक्य संरचना और प्रशासनिक शब्दावली।

General English (100 प्रश्न - 100 अंक): Grammar, Vocabulary, Synonyms/Antonyms, Idioms, Sentence Completion, Comprehension.

पेपर-2 (वर्णनात्मक परीक्षा - Descriptive - 200 अंक):

अनुवाद (Translation):

एक गद्यांश: हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद (सामान्यतः 75 अंक)

एक गद्यांश: अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद (सामान्यतः 75 अंक)

निबंध (Essay):

एक निबंध हिंदी में (25 अंक)

एक निबंध अंग्रेजी में (25 अंक)

4. एसएससी आशुलिपिक (Stenographer Grade 'C' & 'D') में हिंदी

आशुलिपिक परीक्षा के पहले चरण (लिखित परीक्षा) के बाद जो स्किल टेस्ट (Stenography Test) होता है, उसमें अभ्यर्थी हिंदी आशुलिपि (Hindi Shorthand) का चयन कर सकते हैं।

डिक्टेशन गति:

Edit with WPS Office

ग्रेड 'D': 80 शब्द प्रति मिनट (10 मिनट का डिक्टेशन, जिसे कंप्यूटर पर ट्रांसक्राइब करने के लिए 65 मिनट मिलते हैं)।

ग्रेड 'C': 100 शब्द प्रति मिनट (10 मिनट का डिक्टेशन, जिसे ट्रांसक्राइब करने के लिए 55 मिनट मिलते हैं)।

हिंदी माध्यम के वे अभ्यर्थी जिन्होंने मानक (ऋषि प्रणाली, विशिष्ट प्रणाली आदि) आशुलिपि सीखी है, उनके लिए यह केंद्र सरकार के मंत्रालयों में शीघ्र पदस्थापना का बेहतरीन मार्ग है।

प्रमुख चुनौतियाँ और व्यावहारिक सुझाव

CGL/CHSL में अंग्रेजी की अनिवार्यता: यद्यपि गणित, तर्कशक्ति और सामान्य अध्ययन के प्रश्न हिंदी में पढ़े जा सकते हैं, किंतु मुख्य मेरिट सूची में 'English Comprehension' का भार बहुत अधिक है। अतः हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों को अंग्रेजी व्याकरण और शब्दावली पर बुनियादी काम करना अनिवार्य होता है।

तकनीकी शब्दावली का मशीनी अनुवाद: गणित और रीजनिंग के प्रश्नों में कई बार अंग्रेजी के शब्दों का अस्वाभाविक हिंदी अनुवाद आ जाता है (जैसे 'Mean' को 'मतलब' लिख देना बजाय 'माध्य' के)। ऐसी स्थिति में परीक्षा हॉल में तुरंत उस विशेष प्रश्न की भाषा अंग्रेजी करके जांच लेना चाहिए।

JHT के लिए राजभाषा शब्दावली: यदि लक्ष्य अनुवादक परीक्षा है, तो साहित्य के साथ-साथ गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (CSTT) द्वारा जारी मानक प्रशासनिक व पारिभाषिक शब्दावली का नियमित अभ्यास करें।

रेल, डाक, बीमा, बैंक तथा अन्य परीक्षाएं और हिन्दी भाषा :

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों जैसे रेल, डाक, बीमा और बैंकों में हिन्दी भाषा की दोहरी भूमिका है: पहली, विशिष्ट पदों (जैसे राजभाषा अधिकारी/कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी) के लिए मुख्य विषय के रूप में, और दूसरी, सामान्य भर्ती परीक्षाओं (लिपिक, पीओ, कांस्टेबल आदि) में परीक्षा के माध्यम अथवा वैकल्पिक भाषा अनुभाग के रूप में।

1. विशिष्ट राजभाषा एवं अनुवाद पद

केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों, उपक्रमों तथा वित्तीय संस्थानों में संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु विशेष पदों पर भर्तियाँ की जाती हैं:

बैंक एवं वित्तीय संस्थान (IBPS SO / SBI):

पद: राजभाषा अधिकारी (Scale-I)।

अनिवार्य योग्यता: हिन्दी में स्नातकोत्तर (MA) के साथ स्नातक स्तर पर अंग्रेज़ी एक विषय के रूप में, अथवा संस्कृत में MA के साथ स्नातक में हिन्दी व अंग्रेज़ी विषय।

परीक्षा प्रारूप: प्रारंभिक परीक्षा (रीज़निंग, अंग्रेज़ी, बैंकिंग/सामान्य ज्ञान) तथा मुख्य परीक्षा में राजभाषा अधिनियम, संवैधानिक प्रावधान, प्रशासनिक शब्दावली व अनुवाद (वस्तुनिष्ठ एवं विवरणात्मक)।

रेलवे (RRB):

पद: मुख्य राजभाषा अधीक्षक (Chief Law & Rajbhasha Superintendent) तथा कनिष्ठ अनुवादक (Junior Translator)।

योग्यता: हिन्दी/अंग्रेज़ी में स्नातकोत्तर के साथ अनुवाद डिप्लोमा (PGDT) अथवा 2 वर्ष का अनुवाद कार्य अनुभव।


Edit with WPS Office

परीक्षा प्रारूप: कंप्यूटर आधारित परीक्षा (CBT), जिसमें सामान्य ज्ञान के अतिरिक्त हिन्दी व अंग्रेज़ी व्याकरण, प्रशासनिक अनुवाद और राजभाषा नियमों से जुड़े प्रश्न पूछे जाते हैं।

डाक विभाग (India Post):

पद: कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक (JHT) / सहायक निदेशक (राजभाषा)।

भर्ती माध्यम: अधिकांश भर्तियाँ कर्मचारी चयन आयोग (SSC JHT) के माध्यम से या विभागीय पदोन्नति परीक्षाओं द्वारा पूरी की जाती हैं।

बीमा क्षेत्र (LIC, NIACL, GIC):

पद: सहायक प्रशासनिक अधिकारी (AAO - राजभाषा)।

योग्यता एवं पाठ्यक्रम: बैंकिंग राजभाषा अधिकारी के समान ही स्नातकोत्तर योग्यता, बीमा/वित्तीय शब्दावली और अंग्रेज़ी-हिन्दी द्विभाषिक अनुवाद दक्षता।

2. सामान्य भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी भाषा की स्थिति

विशिष्ट राजभाषा पदों के अतिरिक्त, सामान्य गैर-तकनीकी संवर्गों में भी हिन्दी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है:

माध्यम के रूप में: रेलवे भर्ती बोर्ड (RRB NTPC, Group D), डाक विभाग की जीडीएस/डाकिया भर्ती, और बैंक (विशेषकर IBPS RRB ग्रामीण बैंक PO/Clerk) की प्रारंभिक व मुख्य परीक्षाओं में प्रश्नपत्र हिन्दी माध्यम में उपलब्ध रहते हैं।

वैकल्पिक भाषा अनुभाग: IBPS क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRB) की मुख्य परीक्षा में अभ्यर्थी को अंग्रेज़ी अथवा सामान्य हिन्दी में से किसी एक भाषा का चयन करने की छूट मिलती है। इसमें अपठित गद्यांश, व्याकरण, रिक्त स्थान, वाक्य सुधार और मुहावरे पूछे जाते हैं।

3. प्रमुख पाठ्यक्रम घटक

इन परीक्षाओं की तैयारी में निम्नलिखित तीन प्रमुख खंड निर्णायक होते हैं:

संवैधानिक एवं विधिक प्रावधान:

भारतीय संविधान के भाग 17 के अंतर्गत अनुच्छेद 343 से 351।

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित 1967) की धारा 3(3)।

राजभाषा नियम, 1976 (क, ख, ग क्षेत्र वर्गीकरण)।

केन्द्रीय हिन्दी समिति, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास/TOLIC) और संसदीय राजभाषा समिति का गठन।

प्रशासनिक एवं वित्तीय पारिभाषिक शब्दावली:

बैंकिंग, बीमा, डाक और रेल प्रशासन में प्रयुक्त होने वाले मानक तकनीकी शब्दों का द्विभाषिक रूप (Glossary)।

व्यावहारिक अनुवाद एवं व्याकरण:


Edit with WPS Office

अंग्रेज़ी से हिन्दी और हिन्दी से अंग्रेज़ी अनुवाद (अनुच्छेद एवं वाक्य स्तर पर)।

मानक वर्तनी, संधि, समास, पर्यायवाची, विलोम तथा वाक्य-विन्यास।

बैंकिंग क्षेत्र में राजभाषा अधिकारी पद की पात्रता, परीक्षा पैटर्न और पाठ्यक्रम के विस्तृत विश्लेषण के लिए आप IBPS SO Rajbhasha Adhikari Exam Guide देख सकते हैं।

संक्षिप्त (टिप्पणी) एवं दीर्घोत्तरी प्रश्न:

संक्षिप्त टिप्पणी प्रश्न

UPSC मुख्य परीक्षा में अनिवार्य भारतीय भाषा (हिंदी) प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अर्हक (Qualifying) महत्व

(संविधान की 8वीं अनुसूची के अंतर्गत चयन, 300 अंकों की संरचना, न्यूनतम 25% अर्हता तथा पाठ्यक्रम के प्रमुख घटकों का उल्लेख कीजिए।)

कर्मचारी चयन आयोग (SSC) की कनिष्ठ हिंदी अनुवादक (JHT) परीक्षा: पात्रता एवं पाठ्यक्रम संरचना

(शैक्षणिक योग्यता, अनुवाद डिप्लोमा/अनुभव तथा पेपर-1 [वस्तुनिष्ठ] और पेपर-2 [वर्णनात्मक/अनुवाद] के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।)

MPSC और UPSC में परीक्षा माध्यम तथा वैकल्पिक विषय के स्तर पर हिंदी की स्थिति का तुलनात्मक अंतर

(महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग में मराठी/अंग्रेजी की प्राथमिकता और UPSC में त्रि-स्तरीय स्तर पर हिंदी माध्यम व साहित्य के चयन की छूट का विवेचन कीजिए।)

बैंकिंग (IBPS SO) एवं रेल भर्ती में राजभाषा अधिकारी पद हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम के मुख्य आयाम

(संविधान के भाग-17 के राजभाषा प्रावधान, राजभाषा नियम 1976 [क, ख, ग क्षेत्र], प्रशासनिक पारिभाषिक शब्दावली तथा व्यावहारिक अनुवाद की भूमिका को रेखांकित कीजिए।)

दीर्घोत्तरी प्रश्न

"संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की सिविल सेवा परीक्षा में हिंदी भाषा एक माध्यम और हिंदी साहित्य एक सशक्त वैकल्पिक विषय के रूप में स्थापित है।" इस कथन की समीक्षा करते हुए प्रारंभिक, मुख्य और साक्षात्कार स्तर पर हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के समक्ष आने वाली प्रमुख चुनौतियों तथा उनके समाधान के व्यावहारिक उपाय सुझाइए।

"राष्ट्रीय स्तर की भर्ती संस्थाओं (विशेषकर SSC, रेलवे, बैंक और बीमा क्षेत्र) में हिंदी भाषा केवल परीक्षा के माध्यम तक सीमित न रहकर विशिष्ट रोजगारपरक पदों का मुख्य आधार बन चुकी है।" विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों में उपलब्ध राजभाषा, अनुवादक तथा आशुलिपिक संवर्गों के संदर्भ में इस कथन का सविस्तार विश्लेषण कीजिए।

UPSC सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के वैकल्पिक विषय 'हिंदी साहित्य' के पेपर-1 (भाषा खंड) और पेपर-2 (व्याख्या खंड) में अधिकतम अंक (300+) प्राप्त करने की वैज्ञानिक उत्तर-लेखन रणनीति का उदाहरण सहित विस्तृत परीक्षण कीजिए।


Edit with WPS Office

2.0 हिन्दी भाषा का विकास क्रम और प्रतियोगी परीक्षाएं

प्रारंभिक हिन्दी का विकास

प्रारंभिक हिन्दी का उद्भव और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय आर्य भाषाओं के विकास क्रम को तीन प्रमुख ऐतिहासिक चरणों में विभाजित किया जाता है:

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल (1500 ई.पू. से 500 ई.पू.): वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत।

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल (500 ई.पू. से 1000 ई.): पालि, प्राकृत और अपभ्रंश।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल (1000 ई. से अब तक): हिन्दी तथा अन्य आधुनिक आर्य भाषाएँ (मराठी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी आदि)।

प्रारंभिक हिन्दी (आरंभिक हिन्दी / पुरानी हिन्दी) मध्यकालीन भाषा-संरचना से आधुनिक भाषा-संरचना के संक्रमण का कालखंड है। इसका समय सामान्यतः 1000 ई. से 1400 ई. (आदिकाल) तक माना जाता है।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से जब अपभ्रंश भाषा जनसामान्य की पकड़ से दूर होकर रूढ़ होने लगी, तब उसके लोक-प्रचलित रूप से 'अवहट्ठ' और तत्पश्चात आधुनिक बोलियों का विकास हुआ।

विद्वानों की दृष्टि में 'पुरानी हिन्दी'

डॉ. चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी': इन्होंने सबसे पहले उत्तर अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' की संज्ञा दी।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल: इन्होंने अपभ्रंश और देशभाषा के मिले-जुले रूप को 'प्राकृताभास हिन्दी' कहा और इसी आधार पर आदिकाल के साहित्य को विश्लेषित किया।

राहुल सांकृत्यायन: इन्होंने सिद्धों और नाथों की अपभ्रंश मिश्रित भाषा को पुरानी हिन्दी स्वीकार किया और सरहपा को हिन्दी का प्रथम कवि माना।

डॉ. भोलानाथ तिवारी व डॉ. उदय नारायण तिवारी: इन्होंने इसे अपभ्रंश और आधुनिक हिन्दी के मध्य की संक्रमणकालीन भाषा (अवहट्ठ/संक्रांतिकाल) के रूप में व्याख्यायित किया।

प्रारंभिक हिन्दी की भाषाई एवं व्याकरणिक विशेषताएँ

प्रतियोगी परीक्षाओं (विशेष रूप से UPSC/NET/SET/Assistant Professor) के भाषा-खंड में प्रारंभिक हिन्दी की संरचनात्मक विशेषताओं से जुड़े तथ्यात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं। इसे तीन स्तरों पर समझा जा सकता है:

1. ध्वन्यात्मक विशेषताएँ (Phonological Features)

स्वरों का सरलीकरण: संस्कृत के जटिल स्वर 'ऋ', 'ॠ', 'ऌ' प्रारंभिक हिन्दी तक आते-आते पूर्णतः समाप्त हो गए। 'ऋ' का उच्चारण 'रि' या 'रु' में बदल गया (जैसे: ऋषि \rightarrow रिखि/रिषी)।

संध्यक्षरों (ऐ, औ) का उच्चारण: अपभ्रंश-अवहट्ठ की तरह प्रारंभिक हिन्दी में 'ऐ' और 'औ' का उच्चारण संयुक्त स्वर (अइ, अउ) के रूप में प्रचलित रहा (जैसे: बैल \rightarrow बइल, और \rightarrow अउर)।

अनुनासिकता का विकास: मध्यकालीन आर्य भाषाओं के संयुक्त व्यंजनों के सरलीकरण के बाद पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ हो गया और

Edit with WPS Office

क्षतिपूरक अनुनासिकता का जन्म हुआ (जैसे: संस्कृत दन्त \rightarrow प्राकृत दंत \rightarrow प्रारंभिक हिन्दी दाँत; अक्षि \rightarrow आँख)।

व्यंजनों में परिवर्तन:

तालव्य 'श' और मूर्धन्य 'ष' का उच्चारण प्रायः दंत्य 'स' के रूप में सीमित हो गया (जैसे: शिव \rightarrow सिव, पुरुष \rightarrow पुरुस/पुरुख)।

'ण' और 'न' तथा 'ड/ढ़' के नए विकसित रूप 'ड़/ढ़' का प्रयोग बढ़ने लगा।

द्वित्व व्यंजनों का सरलीकरण हुआ (जैसे: कम्म \rightarrow काम, मत्था \rightarrow माथा)।

2. रूपात्मक/व्याकरणिक विशेषताएँ (Morphological Features)

संश्लेषणात्मकता से विश्लेषणात्मकता की ओर संक्रमण:

संस्कृत एक पूर्णतः संश्लेषणात्मक (Synthetic) भाषा थी, जहाँ विभक्ति पद शब्द के भीतर ही जुड़े होते थे (जैसे: रामेण, रामात्)।

प्रारंभिक हिन्दी में भाषा विश्लेषणात्मक (Analytic) होने लगी; अर्थात् कारक चिह्नों (परसर्गों) का शब्दों से अलग प्रयोग शुरू हुआ (जैसे: राम ने, घर से)।

लिंग व्यवस्था: संस्कृत के त्रिलिंगी विधान (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग) में से नपुंसकलिंग समाप्त हो गया और प्रारंभिक हिन्दी केवल दो लिंगों (पुल्लिंग और स्त्रीलिंग) पर आधारित हो गई।

वचन व्यवस्था: द्विवचन का लोप हो गया; केवल एकवचन और बहुवचन ही शेष रहे।

परसर्गों का उद्भव: अपभ्रंश के विकास के साथ नए कारक परसर्गों (कर्ता के लिए 'नैं/ने', कर्म के लिए 'कौं/को', करण के लिए 'सौं/से') का प्रारंभिक रूप दिखने लगा।

सहायक क्रियाओं का प्रयोग: मुख्य क्रिया के साथ काल और भाव दर्शाने के लिए सहायक क्रियाओं (जैसे: है, था, गया, रह्या) का स्वतंत्र प्रयोग आरंभ हुआ।

3. शब्द भंडार (Lexical Features)

तद्भव शब्दों की प्रधानता: इस काल की शब्दावली में प्राकृत और अपभ्रंश से घिसकर आए तद्भव शब्द बहुतायत में थे।

देशज शब्दों का विस्तार: लोक-जीवन और जनभाषा से जुड़े देशज शब्दों का व्यापक समावेश हुआ।

विदेशी/आगत शब्द: 11वीं-12वीं सदी में तुर्क और इस्लामी प्रभाव के कारण आरंभिक स्तर पर अरबी-फारसी के शब्द (जैसे: कागद, सुलतान, तीर आदि) भाषा में प्रवेश करने लगे।

प्रारंभिक हिन्दी का साहित्यिक स्वरूप एवं प्रमुख स्रोत

प्रारंभिक हिन्दी का रूप मूलतः चार साहित्यिक धाराओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है:

इसे प्रमुख रचनाकार, भाषा का स्वरूप, प्रमुख रचनाएँ में हम इसे देख सकते हैं

1. सिद्ध साहित्य सरहपा, शबरपा, कण्हपा पूर्वी अपभ्रंश मिश्रित पुरानी हिन्दी (संध्या भाषा शैली) दोहाकोश, चर्यापद


Edit with WPS Office

2. नाथ साहित्य गोरखनाथ, चौरंगीनाथ खड़ी बोली और राजस्थानी मिश्रित पुरानी हिन्दी गोरखबानी
3. जैन साहित्य हेमचन्द्र, जोइन्दु, रामसिंह पश्चिमी अपभ्रंश प्रभावित परिनिष्ठित रूप शब्दानुशासन, परमात्मप्रकाश, पाहुड़ दोहा
4. रासो काव्य चंदबरदाई, नरपति नाल्ह डिंगल (अपभ्रंश + राजस्थानी) एवं पिंगल (अपभ्रंश + ब्रज) पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो

तथा

लौकिक गद्य व पद्य में दामोदर पंडित, रोड़ा कवि, ज्योतिरीश्वर ठाकुर खड़ी बोली और मैथिली-मिश्रित आरंभिक गद्य-पद्य उक्ति-व्यक्ति प्रकरण, राउरवेल, वर्ण रत्नाकर

खड़ी बोली का आरंभ - अमीर खुसरो , स्पष्ट लोक-प्रचलित प्रारंभिक खड़ी बोली पहेलियाँ, मुकरियाँ, खालिकबारी आदि.

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से मुख्य बिंदु

1. UPSC सिविल सेवा (मुख्य परीक्षा - वैकल्पिक विषय: हिन्दी साहित्य, पेपर-1)

प्रश्न का प्रारूप: "अपभ्रंश, अवहट्ठ और पुरानी हिन्दी के अंतर्संबंधों का विवेचन कीजिए" या "प्रारंभिक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना को स्पष्ट कीजिए।"

परीक्षा रणनीति:

उत्तर में भाषा के संश्लेषणात्मक से विश्लेषणात्मक होने की प्रक्रिया को उदाहरण सहित समझाएँ (संस्कृत \rightarrow प्राकृत \rightarrow अपभ्रंश \rightarrow पुरानी\ हिन्दी)।

सिद्धों के पदों (जैसे सरहपा: "जहि मन पवन न संचरइ...") अथवा अमीर खुसरो की पहेलियों को भाषा-नमूने के रूप में उद्धृत करें।

2. UGC NET / SET एवं सहायक प्राध्यापक (Assistant Professor) परीक्षा

महत्वपूर्ण तथ्य जो वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में पूछे जाते हैं:

'उक्ति-व्यक्ति प्रकरण' (दामोदर शर्मा, 12वीं सदी) एक व्याकरण ग्रंथ है जो बनारस के आसपास की तत्कालीन भाषा का परिचय देता है।

'राउरवेल' (रोड़ा कवि, 10वीं-11वीं सदी) एक शिलांकित चम्पू काव्य है, जिसमें 7 बोलियों के शब्द मिलते हैं।

प्राकृतपैंगलम (14वीं सदी) अवहट्ठ भाषा के छंदों का प्रामाणिक संकलन ग्रंथ है।

पुरानी हिन्दी को 'डिंगल' नाम किस संदर्भ में मिला (राजस्थानी मिश्रित अपभ्रंश) और 'पिंगल' (ब्रज मिश्रित अपभ्रंश)।

3. राज्य लोक सेवा आयोग (UPPSC, BPSC, MPPSC आदि)

सामान्य हिन्दी तथा साहित्य के प्रश्नपत्रों में अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय भाषाओं के वर्गीकरण (जैसे शौरसेनी अपभ्रंश से पश्चिमी हिन्दी, अर्धमागधी से पूर्वी हिन्दी, मागधी से बिहारी हिन्दी) के उद्भव वृक्ष (Tree Diagram) पर सीधे प्रश्न आते हैं।

मध्यकालीन हिन्दी का विकास :

Edit with WPS Office

मध्यकालीन हिन्दी का विकास (1400 ई. से 1800 ई.)

मध्यकालीन हिन्दी का समय भक्तिकाल (पूर्व मध्यकाल: 1400–1600 ई.) और रीतिकाल (उत्तर मध्यकाल: 1600–1800 ई.) के समकालीन माना जाता है। इस कालखंड में हिन्दी अपभ्रंश और अवहट्ठ के व्याकरणिक बंधनों से पूरी तरह मुक्त होकर अपने स्वतंत्र, समृद्ध और प्रौढ़ साहित्यिक स्वरूप में प्रतिष्ठित हुई।

मध्यकाल की सबसे बड़ी भाषाई विशेषता यह रही कि इसमें किसी एक बोली का एकाधिकार न होकर दो प्रमुख साहित्यिक बोलियों—ब्रजभाषा और अवधी—का चर्मोत्कर्ष दिखाई दिया, जबकि जनपदीय बोलचाल और प्रशासन के संपर्क से खड़ी बोली की विकास-भूमि तैयार हुई।

1. मध्यकालीन हिन्दी की व्याकरणिक व भाषाई विशेषताएँ

प्रतियोगी परीक्षाओं के भाषा खंड (Paper-1) की दृष्टि से मध्यकाल में हुए भाषाई परिवर्तनों को तीन स्तरों पर रेखांकित किया जाता है:

क. ध्वन्यात्मक विशेषताएँ (Phonological Features)

स्वर व्यवस्था का स्थिरीकरण:

'अइ' और 'अउ' के रूप में प्रयुक्त होने वाले संयुक्त स्वर मध्यकाल में क्रमशः 'ऐ' और 'औ' के रूप में स्थिर हो गए (जैसे: कइसा \rightarrow कैसा, कउन \rightarrow कौन)।

ऋ, ॠ, ऌ ध्वनियाँ साहित्य की मूल बोलचाल से पूरी तरह बाहर होकर केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों के लेखन तक सीमित रह गईं।

व्यंजन व्यवस्था:

फारसी और तुर्की के प्रभाव से कुछ नई आगत ध्वनियाँ—विशेष रूप से क़, ख़, ग़, ज़, फ़—शहरी बोलचाल और राजदरबारी भाषा में प्रयुक्त होने लगीं।

अपभ्रंश का द्वित्व व्यंजन रूप (Double Consonants) समाप्त होकर सरल व्यंजनों में बदल गया।

ब्रजभाषा में 'ल' ध्वनि का 'र' में परिवर्तन (जैसे: जल \rightarrow जर, फल \rightarrow फर) और अवधी में 'र' का 'ल' में परिवर्तन (जैसे: मंदिर \rightarrow मंदिल) खूब देखा गया।

ख. रूपात्मक एवं व्याकरणिक विशेषताएँ (Morphological Features)

पूर्णतः विश्लेषणात्मक स्वरूप:

मध्यकाल तक आते-आते संश्लेषणात्मक ढाँचा पूरी तरह टूट गया। कारक परसर्ग संज्ञा और सर्वनाम से अलग होकर स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने लगे (जैसे: राम ने, सीता को, घर से)।

लिंग और वचन का सरलीकरण:

केवल दो लिंग (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग) और दो वचन (एकवचन, बहुवचन) ही पूरी तरह प्रतिष्ठित रहे।

तिर्यक रूप (Oblique Forms) का विकास:

Edit with WPS Office

परसर्ग जुड़ने पर संज्ञा शब्दों के अंत में रूप परिवर्तन की प्रवृत्ति स्पष्ट हुई (जैसे: घोड़ा \rightarrow घोड़े को; लड़का \rightarrow लड़कों ने)।

सहायक एवं संयुक्त क्रियाओं का प्रचुर प्रयोग:

मुख्य क्रिया के साथ काल, वाच्य और मनोभाव दर्शाने वाली सहायक क्रियाएँ (जैसे: है, था, गया, रहा) स्वतंत्र और व्यवस्थित व्याकरणिक रूप ले चुकी थीं।

ग. शब्दावली (Lexical Features)

फारसी, अरबी और तुर्की शब्दों का व्यापक समावेशन: मुगल और सल्तनत कालीन प्रशासनिक व्यवस्था के कारण कचहरी, न्याय, सेना और भू-राजस्व से जुड़े शब्द (अदालत, कानून, कागद, सिपाही, दीवान, जमींदार) हिन्दी में घुलमिल गए।

पुनः तत्सम शब्दों का आगमन: रीतिकालीन आचार्यों और रामभक्त कवियों (विशेष रूप से तुलसीदास) ने अपने काव्यों में संस्कृत के तत्सम शब्दों का व्यापक प्रयोग कर भाषा को पुनर्गठित किया।

2. मध्यकाल में विकसित प्रमुख साहित्यिक रूप

मध्यकालीन हिन्दी का संपूर्ण साहित्य मुख्य रूप से तीन बोलियों में विभक्त और विकसित हुआ:

1. ब्रजभाषा (साहित्य की अखिल भारतीय भाषा)

मध्यकाल में ब्रजभाषा केवल मथुरा-आगरा की क्षेत्रीय बोली न रहकर उत्तर भारत की प्रधान साहित्यिक व सांस्कृतिक भाषा बन गई।

प्रमुख क्षेत्र: कृष्णभक्ति काव्य (अष्टछाप कवि, सूरदास, नंददास), रीतिकाल का संपूर्ण दरबारी व लक्षण साहित्य (केशवदास, मतिराम, बिहारी, पद्माकर, घनानंद)।

भाषाई प्रकृति: ओकार-बहुल भाषा (जैसे: गयौ, आयौ, भयो), कोमलकांत पदावली, अनुप्रास और नाद-सौंदर्य के अत्यंत अनुकूल।

2. अवधी

अवधी मुख्य रूप से प्रबंध काव्यों की भाषा के रूप में शीर्ष पर पहुँची।

दो स्पष्ट धाराएँ:

सूफी प्रेमाख्यानक काव्य (ठेठ अवधी): मलिक मोहम्मद जायसी (पद्मावत), कुतुबन, मंझन। इसमें बोलचाल की ग्रामीण अवधी और दोहा-चौपाई शैली का प्रयोग हुआ।

रामभक्ति काव्य (संस्कृतनिष्ठ/साहित्यिक अवधी): गोस्वामी तुलसीदास (रामचरितमानस)। इसमें तत्सम शब्दावली और शास्त्रीय व्याकरण का संतुलित समन्वय दिखा।

भाषाई प्रकृति: व्यंजनांत होने की प्रवृत्ति, आकार-बहुल एवं अकार-बहुल का संतुलित प्रयोग, परसर्गों में 'कहँ', 'सों', 'महँ' का प्रयोग।

3. खड़ी बोली (उर्दू, रेख्ता और दक्खिनी के रूप में)

मध्यकाल में खड़ी बोली यद्यपि मुख्यधारा के काव्य की भाषा नहीं थी, किंतु इसका विस्तार तीन स्तरों पर हुआ:

Edit with WPS Office

संत काव्य: कबीर, दादू और नानक की 'सधुक्कड़ी भाषा' का मूल ढाँचा खड़ी बोली ही था।

दक्खिनी हिन्दी: दक्षिण भारत के मुस्लिम शासकों के संरक्षण में खड़ी बोली का एक साहित्यिक रूप 'दक्खिनी' के नाम से विकसित हुआ (बुरहानुद्दीन जानम, मुल्ला वजही कृत सबरस)।

दरबारी संपर्क: मुग़ल दरबारों और सेना की छावनियों में फारसी लिपि में लिखी जाने वाली खड़ी बोली से 'उर्दू' और 'रेख्ता' का प्रारंभिक रूप उभरा।

3. प्रतियोगी परीक्षाओं (UPSC / NET-SET / व्याख्याता) की दृष्टि से महत्वपूर्ण बिंदु

तुलनात्मक विश्लेषण:

ब्रजभाषा बनाम अवधी: ब्रजभाषा मुख्यतः मुक्तक काव्य और गेय पदों (गीति-तत्व) की भाषा रही, जबकि अवधी मुख्यतः प्रबंध काव्यों (कथानक विस्तार) की भाषा बनी।

आलोचनात्मक संदर्भ:

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार—"मध्यकाल में ब्रजभाषा ऐसी सर्वमान्य काव्यभाषा बन गई थी कि सुदूर गुजरात और बंगाल तक के कवियों ने इसमें रचनाएँ कीं।"

भाषा के वर्गीकरण का फ्लोचार्ट:

शौरसेनी अपभ्रंश \rightarrow ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली।

अर्धमागधी अपभ्रंश \rightarrow अवधी।

खड़ी बोली और नागरी लिपि का विकास :

'नागरी' नामकरण के संबंध में मत:

गुजरात के नागर ब्राह्मण: गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा प्रयुक्त किए जाने के कारण इसे 'नागरी' कहा गया।

नगरों की लिपि: पाटिलपुत्र या काशी जैसे प्रमुख नगरों (चतुर नागरिक वर्ग) में प्रयोग होने के कारण।

देवभाषा संस्कृत का जुड़ाव: संस्कृत (देववाणी) के लिए प्रयुक्त होने के कारण आगे चलकर इसके साथ 'देव' उपसर्ग जुड़कर 'देवनागरी' बना।

प्राचीनतम अभिलेख:

गुजरात के राजा जयभट्ट के एक शिलालेख (लगभग 8वीं सदी) में नागरी लिपि का प्राचीनतम प्रामाणिक साक्ष्य मिलता है।

2. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिक विशेषताएँ

प्रतियोगी परीक्षाओं में अक्सर देवनागरी के वैज्ञानिक स्वरूप पर प्रश्न पूछे जाते हैं:

अक्षरात्मक लिपि (Syllabic Script):

यह रोमन लिपि की तरह वर्णमालात्मक (Alphabetic) नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यंजन में स्वर ('अ') अंतर्निहित रहता है (जैसे: क = क् + अ)।

Edit with WPS Office

ध्वनि और लिपि-चिह्न का पूर्ण सामंजस्य (Phonetic Consistency):

जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है। इसमें मूक वर्ण (Silent Letters जैसे अंग्रेजी के Knowledge, Doubt) नहीं होते।

एक ध्वनि के लिए एक ही चिह्न:

'क' के लिए केवल एक निश्चित चिह्न है (रोमन में 'C' कभी 'क' बनता है और कभी 'स')।

स्थानिक वैज्ञानिकता:

वर्णमाला का वर्गीकरण उच्चारण स्थान के आधार पर अत्यंत व्यवस्थित है:

कंठ्य \rightarrow तालव्य \rightarrow मूर्धन्य \rightarrow दंत्य \rightarrow ओष्ठ्य।

शिरोरेखा (Top Horizontal Line):

शब्दों को बाँधने तथा स्पष्ट दृश्य विभाजन हेतु शिरोरेखा का प्रयोग किया जाता है।

3. देवनागरी लिपि सुधार आंदोलन और मानकीकरण के प्रयास

19वीं और 20वीं सदी में मुद्रण (Printing Press), टाइपराइटर और प्रशासनिक उपयोग के अनुरूप नागरी लिपि में सुधार के कई प्रयास किए गए:

सुधारक / समिति प्रमुख प्रस्ताव व सुझाव

महादेव गोविंद रानडे (1904) एक लिपि विस्तार परिषद की स्थापना कर नागरी सुधार की पहल की।

काका कालेलकर ('अ' की बारहखड़ी) स्वरों के अलग-अलग चिह्नों के बदले केवल 'अ' में मात्राएँ लगाने का सुझाव दिया (जैसे: अ, आ, अि, अी, अु, अू)। यद्यपि इसे स्वीकार नहीं किया गया।

सावरकर बंधु टाइपराइटर की सुगमता के लिए 'अ' की बारहखड़ी का प्रचार किया।

डॉ. श्यामसुंदर दास पंचमाक्षर (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) के स्थान पर एकरूपता हेतु केवल अनुस्वार (ं) के प्रयोग का सुझाव दिया (जैसे: गङ्गा \rightarrow गंगा, पञ्चम \rightarrow पंचम)। इसे व्यापक स्वीकृति मिली।

श्रीनिवास अयंगर महाप्राण ध्वनियों (ख, घ, छ आदि) को अल्पप्राण के नीचे कोई विशिष्ट चिह्न लगाकर लिखने का सुझाव दिया (अस्वीकृत)।

उत्तर प्रदेश सरकार की 'देवनागरी लिपि सुधार समिति' (1947) आचार्य नरेंद्र देव की अध्यक्षता में गठित। इसने पंचमाक्षरों के स्थान पर अनुस्वार, मात्राओं के संयोजन और मानक वर्ण-रूपों पर महत्वपूर्ण संस्तुतियाँ दीं।

4. भारत सरकार द्वारा स्वीकृत मानक देवनागरी स्वरूप

केंद्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा कम्प्यूटर, मुद्रण और प्रशासनिक पत्राचार हेतु निम्नलिखित मानकीकरण तय किए गए हैं:

मानक वर्ण-रूप:


Edit with WPS Office

पुराने अमानक रूपों—जैसे अ, झ, भ, ध, ण के बदले आधुनिक रूपों को ही आधिकारिक मान्यता दी गई।

संयुक्त वर्णों का नियम:

जिन व्यंजनों के अंत में खड़ी पाई होती है, उनका संयुक्त रूप बनाते समय पाई हटा दी जाती है (जैसे: ख्याति, पक्का, पत्ता)।

बिना पाई वाले व्यंजनों (छ, ट, ठ, ड, ढ, द, ह) के नीचे केवल हलंत (्) का प्रयोग किया जाता है (जैसे: चिह्न, विद्या, मिट्टी)।

कारक परसर्गों का अलगाव:

संज्ञा शब्दों के कारक चिह्न हमेशा अलग लिखे जाते हैं (जैसे: राम ने, घर से)।

सर्वनाम शब्दों में कारक चिह्न मिलाकर लिखे जाते हैं (जैसे: उसने, मुझको, उनसे)।

विदेशी ध्वनियों के लिए नुक्ता:

उर्दू/फारसी प्रभाव वाली ध्वनियों के लिए नुक्ता (क़, ख़, ग़, ज़, फ़) तथा अंग्रेजी की विवृत 'ऑ' ध्वनि के लिए अर्धचंद्र (जैसे: डॉक्टर, कॉलेज) का मानक निर्धारण किया गया।

3. परीक्षा-उपयोगी अभ्यास प्रश्न (Model Questions)

टिप्पणी (8 अंक): द्विवेदी युग में खड़ी बोली के मानकीकरण की प्रक्रिया को संक्षेप में रेखांकित कीजिए।

टिप्पणी (8 अंक): देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता के मुख्य आधार क्या हैं?

दीर्घोत्तरी प्रश्न (20 अंक): "खड़ी बोली का विकास केवल एक साहित्यिक बोली का विकास नहीं, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता और आधुनिकता का भाषाई प्रस्थान था।" फोर्ट विलियम कॉलेज से लेकर छायावाद तक के साक्ष्यों के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

संक्षिप्त टिप्पणी प्रश्न :

'पुरानी हिन्दी' की अवधारणा एवं नामकरण पर विद्वानों के मत

(डॉ. चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' द्वारा उत्तर अपभ्रंश को पुरानी हिन्दी कहना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल की 'प्राकृताभास हिन्दी' तथा राहुल सांकृत्यायन की दृष्टि को स्पष्ट कीजिए।)

मध्यकालीन हिन्दी में ब्रजभाषा और अवधी के साहित्यिक स्वरूप का तुलनात्मक अंतर

(ब्रजभाषा की मुक्तक/गेय प्रकृति तथा अवधी की प्रबंधात्मक शैली [जायसी की ठेठ अवधी बनाम तुलसीदास की तत्समप्रधान अवधी] के संदर्भ में टिप्पणी लिखिए।)

फोर्ट विलियम कॉलेज और आधुनिक खड़ी बोली गद्य के चार प्रारंभिक उन्नायक

(लल्लू लाल, सदल मिश्र, मुंशी सदासुखलाल 'नियाज़' और इंशा अल्ला खाँ के गद्य की भाषाई विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।)

खड़ी बोली के मानकीकरण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और 'सरस्वती' पत्रिका की भूमिका

(द्विवेदी युग में व्याकरणिक अनुशासन, वर्तनी सुधार तथा गद्य और पद्य की भाषा के एकीकरण के प्रयासों का उल्लेख


Edit with WPS Office

कीजिए।)

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और इसके प्रमुख सुधार आंदोलन

(देवनागरी की अक्षरात्मक व ध्वन्यात्मक प्रकृति तथा डॉ. श्यामसुंदर दास एवं उत्तर प्रदेश की 'देवनागरी लिपि सुधार समिति (1947)' की संस्तुतियों पर प्रकाश डालिए।)

दीर्घोत्तरी प्रश्न :

"अपभ्रंश और अवहट्ठ से आधुनिक आर्य भाषाओं की ओर संक्रमण के दौर में भाषा की आंतरिक संरचना में युगांतरकारी बदलाव आए।" प्रारंभिक हिन्दी की ध्वन्यात्मक, रूपात्मक (संश्लेषणात्मकता से विश्लेषणात्मकता) और व्याकरणिक विशेषताओं का सोदाहरण विस्तृत परीक्षण कीजिए।

"मध्यकाल हिन्दी की साहित्यिक बोलियों के चरमोत्कर्ष और बहुआयामी प्रसार का स्वर्णकाल था।" भक्तिकाल एवं रीतिकाल के संदर्भ में ब्रज, अवधी और दक्खिनी/संतों की खड़ी बोली के विकास, व्याकरणिक संरचना तथा शब्द-भंडार में हुए परिवर्तनों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

"अमीर खुसरो की पहेलियों से आरंभ होकर छायावाद तक आते-आते खड़ी बोली ने जनपदीय बोली से अखिल भारतीय साहित्यिक व मानक भाषा बनने की ऐतिहासिक यात्रा तय की।" 19वीं सदी के भाषाई द्वंद्व (राजा शिवप्रसाद बनाम राजा लक्ष्मण सिंह), भारतेन्दु युग और छायावादी दौर के साक्ष्यों के आधार पर खड़ी बोली के विकास-क्रम का मूल्यांकन कीजिए।

Edit with WPS Office